

दत्ता च द्वेधा Schol. bei WILSON, SĀMĀHJAK. p. 9. — Vgl. द्विधा, द्वेध, द्वैधम्.

द्वेष (von 1. द्विष्) m. *Abneigung, Widerwille, Hass* (Gegens. रम्य, काम, इच्छा) ÇABDAR. im ÇKDR. ÇAT. Br. 2, 3, 4, 4. M. 4, 163. 6, 60. 12, 26. MBh. 5, 5825. Bhāg. 3, 34. 7, 27. Indr. 3, 62. H. 73. दुःखानुशयो द्वेषः JOGAS. 2, 8. अन्नं सुच. 1, 81, 3. भक्तं 118, 11. कृतकार्यं ÇĀK. 66, 2. अन्य-ग्रुभं = मत्सरं AK. 3, 4, 25, 174. दीर्घं = अनुशय 22, 150. अकन्येति तु यः कन्यां ब्रूयाद्वेषेण मानवः M. 8, 225. मद्ब्रूयात् R. 2, 53, 15. मा चास्मै त्वं कथा द्वेषम् PAÑKAT. III, 160. भगवत्परो द्वेषम् Bhāg. P. 7, 4, 4. Am Ende eines adj. comp. f. आः पतिविषये संज्ञातद्वेषा स्त्रियम् KULL. zu M. 9, 77. — Vgl. अद्वेष, तुलसीद्वेषा.

द्वेषणा (wie eben) 1) adj. *eine Abneigung —, einen Widerwillen an den Tag legend, hassend, anfeindend*; m. Feind AK. 2, 8, 2, 10. MBh. 12, 6278. — 2) n. *Abneigung; Anfeindung, Hass* ÇABDAR. im ÇKDR. दुःखद्वेषणलोलाता सुच. 1, 331, 19. अकस्माच्चैव पार्थिवानां (obj.) द्वेषणं नोपपद्यते MBh. 5, 3263.

द्वेषणीय partic. fut. pass. von 1. द्विष्; vgl. द्वैषणीया.

द्वैषम् (von 1. द्विष्) n. *Abneigung, Widerwille; Anfeindung, Hass*; concret: *ein Böswilliger, Feind* (vgl. 2. द्विष् und रत्नम् zur Form): अर्षी न द्वेषो धृष्टता परि ऋ. RV. 4, 167, 9. 34, 11. 48, 8. द्वेषः, अमीवाः 2, 33, 2. 4, 10, 7. आधत्ता द्वेषो अर्षयं कृणोत 6, 47, 12. आरे देवा द्वेषो अस्मद्यु-पोतन 10, 63, 12. VS. 5, 26. AV. 6, 4, 2. plur.: युयोध्यस्मद्वैषांसि RV. 2, 6, 4, 27, 7. अति द्वैषांसि तरेम 3, 27, 3. परि द्वेषोभिर्यमा वंशक्तु 7, 60, 9. पूरा द्वेषोभ्यः VS. 21, 43. 28, 15. AV. 5, 22, 1. ये अर्षयः शशमानाः परिगुर्दि-त्वा द्वेषास्यनपत्यवत्तः 18, 2, 47. — Vgl. अ. तरद्वे, यावयद्वे, युतं, वाकु.

द्वैषिन् (wie eben) adj. *eine Abneigung —, einen Widerwillen habend; hassend, anfeindend*; m. Feind P. 3, 2, 142. H. 729. अन्नं सुच. 1, 118, 14. पूर्वोक्तधर्मशास्त्राणामभवद्वेषिणः सदा HARIV. 1307. नयं Kām. Nitis. 5, 4. वलभिरिचयद्वेषिपारावत MĀLAY. 33. (बुद्धिः) द्वेषिणी गुणिनामपि MBh. 6, 5829. गुरुं 3, 16. मित्रं 12, 6276. ब्राह्मणं R. 4, 37, 10. पुरुष-द्वेषिणी JĀG. 1, 73. श्रावयोः HARIV. 3154. (या) द्वैताद्वेषिणः (करोति) BHART. 2, 96. RAGH. 17, 73. PRAB. 36, 15. द्वेषिद्वेषर् PAÑKAT. I, 66. H. 10. 477. — Vgl. क्रिया, गन्नासुरं.

द्वेषयितुं (द्विष् + युत्) adj. *Anfeindung abwendend* RV. 4, 11, 5. 5, 9, 6.

द्वेषर् (von 1. द्विष्) nom. ag. *Anfeinder, Hasser, Feind* KAUC. 90. MBh. 1, 1941. 2, 1934. 2545. 12, 8051. 14, 750. HARIV. 14451. अद्वेषा सर्वभूता-नां मैत्रः कर्ण एव च Bhāg. 12, 13. अन्नं der einen Widerwillen gegen Speise hat सुच. 1, 121, 5.

द्वेष्व (von द्वेषर्) n. *Hass*: अ० VEDĀNTAS. (Allah.) No. 148.

द्वैष्य (von 1. द्विष्) adj. *wovor oder vor dem man eine Abneigung hat, widerlich, unangenehm, verhasst*; subst. *Feind* (Gegens. प्रिय, इष्ट, दयित) AK. 3, 1, 45. H. 448. AV. 1, 20, 1. मुखं वा यदि वा दुःखं द्वैष्यं वा यदि वा प्रियम् । यथावत्सर्वमाचक्ष्व MBh. 4, 520. 5, 1097 (vgl. PAÑKAT. I, 269). ला-भालभे प्रियद्वैष्ये च समः 14, 535. अर्थानिष्ठान्, द्वैष्यान् 14, 789. R. 2, 23, 12 (GORR. 20, 14). द्वैष्यो मित्राणां परिवर्त्यः स्वानाम् AV. 9, 2, 14. ÇAT. Br. 2, 3, 4, 4. द्वैष्यो भवत्यर्थपरो हि लोके R. 2, 21, 57. मूर्खाणां पण्डिता द्वैष्या निर्धनानां मन्त्राधनाः PAÑKAT. I, 467. KATHĀS. 19, 36. Bhāg. P. 1, 8, 29. 3, 29, 39. प्रकृष्यन्द्वैष्यं मनसा ध्यायेत् KĀTJ. ÇR. 9, 4, 13. ÇAT. Br. 12, 9, 3,

6. ÇĀK. ÇR. 14, 32, 6. AIT. Br. 3, 34. °कल्प्य LĀTJ. 1, 10, 8. 11. — M. 9, 307 (vgl. MĀRK. P. 27, 24). MBh. 3, 14718. 12, 6628. 13, 4324. Bhāg. 6, 9, 9, 29. R. 4, 18, 28. RAGH. 1, 28. PAÑKAT. 10, 2.

द्वैष्यता (von द्वैष्य) f. *das Verhasstsein*: °ता याति लोके PAÑKAT. I, 147. 317. द्वैसत adj. *derjenige welcher vom Nabel aufwärts und abwärts gleiches Maass hat* (Comm.) LĀTJ. 1, 1, 7. Der Comm. zieht die Lesart द्वैसत (vgl. द्वैस; vor).

द्वै indecl. gaṇa चादि zu P. 4, 4, 57. Fehlt in der v. 1.

द्वैगत (von द्वैगत्) n. N. eines Sāman PAÑKAT. Br. 14, 9. LĀTJ. 4, 6, 16. 6, 12, 7. Ind. St. 3, 220.

द्वैगुणिकं (von द्वैगुण) adj. *der sich für geliehenes Geld das Doppelte wiedergeben lässt, der 100 Procent nimmt* P. 4, 4, 30. Sch. m. Wucherer H. 880.

द्वैगुण्य (wie eben) n. *die doppelte Anzahl, der doppelte Betrag, das doppelte Maass*: कुसीद्वद्वैगुण्यं नात्येति सकृदाहता M. 8, 151. MBh. 5, 4608. R. 5, 27. 32. KATHĀS. 19, 99. 23, 218. KULL. zu M. 2, 38. 7, 70.

द्वैजात (von द्वैजाति) adj. *zu den Zweimalgeborenen gehörig, aus ihnen bestehend*: वर्ण M. 8, 374.

द्वैतं n. *Zweiheit, Dualität, Dualismus* H. 1424. ÇAT. Br. 14, 5, 4, 15. KAP. 1, 22. 155. PRAB. 21, 8. 81, 5. Bhāg. P. 1, 15, 31. 6, 15, 26. 16, 19. 7, 12, 10. MĀRK. P. 23, 45. °वाद Verz. d. Oxf. H. No. 170. °वादिन् ÇKDR. WILS. °निर्णयवाद Verz. d. B. H. No. 1403. द्वैत (s. auch bes.) n. MBh. 3, 10639. PRAB. 21, 8. Bhāg. P. 7, 15, 62. fgg. MĀRK. P. 23, 45. Wohl zunächst zurückzuführen auf द्विता, nom. abstr. von द्वि; vgl. त्रैत und das Verhältniss von द्वैत zu देवता.

द्वैतभूत द्वैत + भूत m. pl. Name einer Schule Ind. St. 1, 61. 3, 274. fg.

1. द्वैतवर्ण (von द्वैतवर्ण) m. patron. des Königs Dhvasan ÇAT. Br. 13, 5, 4, 9.

2. द्वैतवन (vom vorherg.) adj. *zu Dhvasan Dvaitavana in Beziehung stehend*: सरस् ÇAT. Br. 13, 5, 4, 9. MBh. 3, 928. fgg. 12359. fg. 14344. वन (auch n. mit Ergänzung von वन) 453. 934. 1451. 4, 87.

द्वैतैतथ्योपनिषद् द्वैत - वै + उप० f. Titel einer Upanishad Ind. St. 1, 302. 2, 102.

द्वैतीयक (von द्वितीय) adj. *jeden zweiten Tag wiederkehrend*: अर् VJUTP. 220. — Vgl. द्वितीयक.

द्वैतीयिकं adj. = द्वितीय P. 4, 2, 8. Vārtt. 3. 4 und dazu KĀC. Davon nom. abstr. °ता NĀISH. 2, 110.

द्वैध (von द्विधा oder द्वेधा) 1) adj. oxyt. *zweifach, doppelt* P. 5, 3, 45, Vārtt. द्वैधानि तूष्णानि Schol. — 2) द्वैधम् adv. *in zwei Theile, — Theilen* P. 5, 3, 45. VOP. 7, 45. द्वैधमिव कृत्वा दक्षति AIT. Br. 3, 4, 7, 4. Nir. 5, 3. KĀTJ. ÇR. 14, 2, 19. सोमं क्रीत्वा द्वैधमुपनक्त 15, 4, 3. HARIV. 38. — 3) n. *Zweiheit, das doppelte Vorhandensein, Auseinandergelien, Verschiedenheit, Zweitheilung, Doppelwesen, Spaltung —, Trennung in zwei Theile, Zwiespalt, Streit* TRIK. 3, 2, 18. विधिं LĀTJ. 4, 10, 19. श्रुतिद्वैधं तु पत्र स्यात्तत्र धर्मावुभौ स्मृता M. 2, 14. 9, 32. मतिं MBh. 3, 12485. बहुलं परिगृह्णीत्यात्मानिद्विधे नराधिपः M. 8, 73. JĀG. 2, 78. ततः सान्निवत् साधु द्वैधवादकृतं भवेत् । असान्निवत्तमनाथं वा परीदयं तद्विशेषतः ॥ MBh. 12, 3212. अर्थानां हि पुनर्द्वैधे नित्यं भवति संशयः । अन्यथा चिन्तितो ह्यर्थः पुन-